नमो नमो निम्मलदंसणस्स

बाल ब्रह्मचारी श्री नेमिनाथाय नम:

पूज्य आनन्द-क्षमा-ललित-सुशील-सुधर्मसागर-गुरूभ्यो नम:

आगम-३३

वीरस्तव

आगमसूत्र हिन्दी अनुवाद

अनुवादक एवं सम्पादक

आगम दीवाकर मुनि दीपरत्नसागरजी

[M.Com. M.Ed. Ph.D. श्रुत महर्षि]

आगम हिन्दी-अनुवाद-श्रेणी पुष्प-३३

आगमसूत्र-३३- 'वीरस्तव'

पयन्नासूत्र-१०- हिन्दी अनुवाद

कहां क्या देखे ?

क्रम	विषय	पृष्ठ	क्रम	विषय	पृष्ठ
१	श्रमण भगवान महावीर-विशेषणादि	०५	२	विशेषण आश्रित स्तवना	०५

४५ आगम वर्गीकरण						
क्रम	आगम का नाम	सूत्र		क्रम	आगम का नाम	सूत्र
०१	आचार	अंगसूत्र-१		२५	आतुरप्रत्याख्यान	पयन्नासूत्र-२
०२	सूत्रकृत्	अंगसूत्र-२		२६	महाप्रत्याख्यान	पयन्नासूत्र-३
०३	स्थान	अंगसूत्र-३		२७	भक्तपरिज्ञा	पयन्नासूत्र-४
०४	समवाय	अंगसूत्र-४		२८	तंदुलवैचारिक	पयन्नासूत्र-५
०५	भगवती	अंगसूत्र-५		२९	संस्तारक	पयन्नासूत्र-६
०६	ज्ञाताधर्मकथा	अंगसूत्र-६		३०.१	गच्छाचार	पयन्नासूत्र-७
०७	उपासकदशा	अंगसूत्र-७		३०.२	चन्द्रवेध्यक	पयन्नासूत्र-७
०८	अंतकृत् दशा	अंगसूत्र-८		३१	गणिविद्या	पयन्नासूत्र-८
०९	अनुत्तरोपपातिकदशा	अंगसूत्र-९		३२	देवेन्द्रस्तव	पयन्नासूत्र-९
१०	प्रश्नव्याकरणदशा	अंगसूत्र-१०		३३	वीरस्तव	पयन्नासूत्र-१०
११	विपाकश्रुत	अंगसूत्र-११		३४	निशीथ	छेदसूत्र-१
१२	औपपातिक	उपांगसूत्र-१		३५	बृहत्कल्प	छेदसूत्र-२
१३	राजप्रश्निय	उपांगसूत्र-२		३६	व्यवहार	छेदसूत्र-३
१४	जीवाजीवाभिगम	उपांगसूत्र-३		३७	दशाश्रुतस्कन्ध	छेदसूत्र-४
१५	प्रज्ञापना	उपांगसूत्र-४		३८	जीतकल्प	छेदसूत्र-५
१६	सूर्यप्रज्ञप्ति	उपांगसूत्र-५		३९	महानिशीथ	छेदसूत्र-६
१७	चन्द्रप्रज्ञप्ति	उपांगसूत्र-६		४०	आवश्यक	मूलसूत्र-१
१८	जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति	उपांगसूत्र-७		४१.१	ओघनिर्युक्ति	मूलसूत्र-२
१९	निरयावलिका	उपांगसूत्र-८		४१.२	पिंडनिर्युक्ति	मूलसूत्र-२
२०	कल्पवतंसिका	उपांगसूत्र-९		४२	दशवैकालिक	मूलसूत्र-३
२१	पुष्पिका	उपांगसूत्र-१०		४३	उत्तराध्ययन	मूलसूत्र-४
२२	पुष्पचूलिका	उपांगसूत्र-११		४४	नन्दी	चूलिकासूत्र-१
२३	वृष्णिदशा	उपांगसूत्र-१२		४५	अनुयोगद्वार	चूलिकासूत्र-२
२४	चतु:शरण	पयन्नासूत्र-१		---	----------	-----

मुनि दीपरत्नसागरजी प्रकाशित साहित्य

आगम साहित्य			आगम साहित्य		
क्र	साहित्य नाम	बूक्स	क्रम	साहित्य नाम	बूक्स
1	मूल आगम साहित्य:-	147	6	आगम अन्य साहित्य:-	10
	-1- आगमसुत्ताणि-मूलं print	[49]		-1- આગમ કથાનુયોગ	06
	-2- आगमसुत्ताणि-मूलं Net	[45]		-2- आगम संबंधी साहित्य	02
	-3- आगममञ्जूषा (मूल प्रत)	[53]		-3- ऋषिभाषित सूत्राणि	01
2	आगम अनुवाद साहित्य:-	165		-4- आगमिय सूक्तावली	01
	-1- આગમસૂત્ર ગુજરાતી અનુવાદ	[47]		आगम साहित्य- कुल पुस्तक	516
	-2- आगमसूत्र हिन्दी अनुवाद Net	[47]			
	-3- AagamSootra English Trans.	[11]			
	-4- આગમસૂત્ર સટીક ગુજરાતી અનુવાદ	[48]			
	-5- आगमसूत्र हिन्दी अनुवाद print	[12]		अन्य साहित्य:-	
3	आगम विवेचन साहित्य:-	171	1	તત્ત્વાભ્યાસ સાહિત્ય-	13
	-1- आगमसूत्र सटीकं	[46]	2	સૂત્રાભ્યાસ સાહિત્ય-	06
	-2- आगमसूत्राणि सटीकं प्रताकार-1	[51]	3	વ્યાકરણ સાહિત્ય-	05
	-3- आगमसूत्राणि सटीकं प्रताकार-2	[09]	4	વ્યાખ્યાન સાહિત્ય-	04
	-4- आगम चूर्णि साहित्य	[09]	5	જિનભક્તિ સાહિત્ય-	09
	-5- सवृत्तिक आगमसूत्राणि-1	[40]	6	વિધિ સાહિત્ય-	04
	-6- सवृत्तिक आगमसूत्राणि-2	[08]	7	આરાધના સાહિત્ય	03
	-7- सचूर्णिक आगमसुत्ताणि	[08]	8	પરિચય સાહિત્ય-	04
4	आगम कोष साहित्य:-	14	9	પૂજન સાહિત્ય-	02
	-1- आगम सद्दकोसो	[04]	10	તીર્થંકર સંક્ષિપ્ત દર્શન	25
	-2- आगम कहाकोसो	[01]	11	પ્રકીર્ણ સાહિત્ય-	05
	-3- आगम-सागर-कोष:	[05]	12	દીપરત્નસાગરના લઘુશોધનિબંધ	05
	-4- आगम-शब्दादि-संग्रह (प्रा-सं-गु)	[04]		આગમ સિવાયનું સાહિત્ય કૂલ પુસ્તક	85
5	आगम अनुक्रम साहित्य:-	09			
	-1- આગમ વિષયાનુક્રમ- (મૂળ)	02		1-आगम साहित्य (कुल पुस्तक)	516
	-2- आगम विषयानुक्रम (सटीकं)	04		2-आगमेतर साहित्य (कुल	085
	-3- आगम सूत्र-गाथा अनुक्रम	03		दीपरत्नसागरजी के कुल प्रकाशन	601

મુનિ દીપરત્નસાગરનું સાહિત્ય

1	મુનિ દીપરત્નસાગરનું આગમ સાહિત્ય	[કુલ પુસ્તક 516]	તેના કુલ પાના [98,300]
2	મુનિ દીપરત્નસાગરનું અન્ય સાહિત્ય	[કુલ પુસ્તક 85]	તેના કુલ પાના [09,270]
3	મુનિ દીપરત્નસાગર સંકલિત 'તત્ત્વાર્થસૂત્ર'ની વિશિષ્ટ DVD		તેના કુલ પાના [27,930]

અમારા પ્રકાશનો કુલ ૬૦૧ + વિશિષ્ટ DVD કુલ પાના 1,35,500

[३३] वीरस्तव
पयन्नासूत्र-१०- हिन्दी अनुवाद

सूत्र – १

जगजीव बन्धु, भविजन रूपी कुमुद को विकसानेवाला, पर्वत समान धीर ऐसे वीर जिनेश्वर को नमस्कार करके उन्हें प्रगट नाम के द्वारा मैं स्तवन करूँगा ।

सूत्र – २-३

अरुह, अरिहंत, अरहंत, देव, जिन, वीर, परम करुणालु, सर्वज्ञ, सर्वदर्शी, समर्थ, त्रिलोक के नाथ वीतराग केवली, त्रिभुवनगुरु, सर्व त्रिभुवन वरिष्ठ भगवन् तीर्थंकर, शक्र द्वारा नमस्कार किए गए, जिनेन्द्र तुम जय पाओ ।

सूत्र – ४

वर्धमान, हरि, हर, कमलासन प्रमुख नाम से जड़मति ऐसा मैं सूत्रानुसार यथार्थ गुण द्वारा स्तवन करूँगा ।

सूत्र – ५

भवबीज समान अंकुर से हुए कर्म को ध्यान समान अग्नि द्वारा जलाकर फिर से भव समान गहन वन में न ऊगने देनेवाले हो इसलिए हे नाथ ! तुम 'अरूह' हो ।

सूत्र – ६

तिर्यंच के घोर उपसर्ग, परीषह, कषाय पैदा करनेवाले शत्रु को हे नाथ ! तुमने पूरी तरह से वध कर दिया है इसलिए तुम अरिहंत हो ।

सूत्र – ७

उत्तम ऐसे वंदन, स्तवन, नमस्कार, पूजा, सत्कार और सिद्धि गमन की योग्यता वाले हो जिस कारण से तुम 'अरहंत' हो ।

सूत्र – ८

देव, मानव, असुर प्रमुख की उत्तम पूजा को तुम योग्य हो, धीरज और मान से छोड़े हुए हो इसलिए हे देव तुम अरहंत हो ।

सूत्र – ९

रथ-गाड़ी निदर्शित अन्य संग्रह या पर्वत की गुफा आदि तुमसे कुछ दूर नहीं है इसलिए हे जिनेश्वर तुम अरहंत हो ।

सूत्र – १०

जिसने उत्तम ज्ञान द्वारा संसार मार्ग का अंत करके, मरण को दूर करके निज स्वरूप समान संपत्ति पाई है इसलिए तुम अरहंत हो ।

सूत्र – ११

मनोहर या अमनोहर शब्द आप से छिपे नहीं हैं और फिर मन और काया के योग के सिद्धांत से रंजित किया है इसलिए तुम अरहंत हो ।

सूत्र – १२

देवेन्द्र और अनुत्तर देव की समर्थ पूजा आदि के योग्य हो, करोड़ों मर्यादा का अंत करनेवाले को शरण के योग्य हो इसलिए अरहंत हो ।

सूत्र – १३

सिद्धि के संग से दूसरे मोहशत्रु के विजेता हो, अनन्त सुख, पुण्य परिणति से परिवेष्टित हो इसलिए देव हो

सूत्र – १४

राग आदि वैरी को दूर करके, दुःख और क्लेश का समाधान किया है यानि निवारण किया है । गुण आदि से शत्रु को आकर्षित करके जय किया है इसलिए हे जिनेश्वर ! तुम देव हो ।

सूत्र – १५, १६

दुष्ट ऐसे आठ कर्म की ग्रंथि को प्राप्त धन समूह को दूर किया है उत्तम मल्लसमूह को आकलन करके तप से शुद्ध किया । मतलब तप द्वारा कर्म समान मल्ल को खत्म किया है इसलिए तुम वीर हो ।

प्रथम व्रत ग्रहण के दिन इन्द्र के विनयकरण की ईच्छा का निषेध कर के तुम उत्तम मुनि हुए इसलिए तुम महावीर हो ।

सूत्र – १७

चल रहे या नहीं चल रहे प्राणी ने आपको दुभाए या भक्ति की, आक्रोश किया या स्तुति की । शत्रु या मित्र बने, तुमने करुणा रस से मन को रंजित किया इसलिए तुम परम कारुणिक (करुणावाले) हो ।

सूत्र – १८

दूसरों के जो भाव-सद्भाव या भावना जो हुए – जो होंगे या होते हैं उस ज्ञान द्वारा तुम जानते हो – कहते हो इसलिए तुम सर्वज्ञ हो ।

सूत्र – १९

समस्त भुवन में अपने-अपने स्वरूप में रहे सामान्य, बलवान् या कमझोर को (तुम देखते हो) इसलिए तुम सर्वदर्शी हो ।

सूत्र – २०

कर्म और भव का पार पाया है या श्रुत समान जलधि को जानकर उसका सर्व तरह से पार पाया है इसलिए तुमको पारग कहा है ।

सूत्र – २१

वर्तमान, भावि और भूतवर्ती जो चीज हो उसको हाथ में रहे आँबला के फल की तरह तुम जानते हो इसलिए त्रिकालविद हो ।

सूत्र – २२

अनाथ के नाथ हो । भयंकर गहन भवन में रहे हुए जीव को उपदेश दान से मार्ग समान नयन देते हो इसलिए तुम नाथ हो ।

सूत्र – २३

प्राणीओं के चित्त में प्रवेश करनेवाली अच्छी तरह की चीज का राग-रति उस रागरूप को पुनःदोष रूप से समझाया है या विपरीत किया है मतलब कि राग दूर किया है इसलिए वीतराग हो ।

सूत्र – २४

कमल समान आसन है इसलिए हरि-इन्द्र हो । सूर्य या इन्द्र प्रमुख के मान का खंड़न किया है इसलिए शंकर हो । हे जिनेश्वर ! एक समान मुख आश्रय तुमसे मिलते हैं वो भी तुम ही हो ।

सूत्र – २५

जीव का मर्दन, चूर्णन, विनाश भक्षण, हत्या, हाथ-पाँव का विनाश, नाखून, होठ का विदारण, इस कार्य का जिसका लक्ष्य या आश्रयज्ञान है ।

सूत्र – २६

अन्य कुटिलता, त्रिशुल, जटा, गुरूर, नफरत, मन में असूया गुणाकारी की लघुता ऐसे कईं दोष हो ।

सूत्र – २७

ऐसे बहुरूप धारी देव तुम्हारे पास बसते हैं तो भी उसे विकार रहित किए, इसलिए तुम वीतराग हो ।

सूत्र – २८

सर्वद्रव्य के प्रति पर्याय की अनन्त परिणति स्वरूप को एक साथ और त्रिकाल संस्थित रूप से जानते हो इसलिए तुम केवली हो ।

सूत्र – २९

उस विषय से तुम्हारी अप्रतिहत, अनवरत, अविकल शक्ति फैली हुई है । रागद्वेष रहित होकर चीजों को जाना है । इसलिए केवली कहलाते हो ।

सूत्र – ३०

जो संज्ञी पंचेन्द्रिय को त्रिभुवन शब्द द्वारा अर्थ ग्राह्य होने से उनको सद्धर्म में जो जोड़ते हो अर्थात् अपनी वाणी से धर्म में जुड़ते हैं इसलिए तुम त्रिभुवन गुरु हो ।

सूत्र – ३१

प्रत्येक सूक्ष्म जीव को बड़े दुःख से बचानेवाले और सबके हितकारी होने से तुम सम्पूर्ण हो ।

सूत्र – ३२

बल, वीर्य, सत्त्व, सौभाग्य, रूप, विज्ञान, ज्ञान में उत्कृष्ट हो । उत्तम पंकज में निवास करते हो (विचरते हो) इसलिए तुम त्रिभुवनमें श्रेष्ठ हो ।

सूत्र – ३३

प्रतिपूर्ण रूप, धन, कान्ति, धर्म, उद्यम, यशवाले हो, भयसंज्ञा भी तुमसे शिथिल हुई है इसलिए हे नाथ ! तुम भयान्त हो ।

सूत्र – ३४

यह लोक परलोक आदि सात तरह के भय आपके विनष्ट हुए हैं । इसलिए हे जिनेश ! तुम भयान्त हो ।

सूत्र – ३५

चतुर्विध संघ या प्रथम गणधर समान ऐसे तीर्थ को करने के आचारवाले इसलिए तुम तीर्थंकर हो ।

सूत्र – ३६

इस प्रकार गुण समूह से समर्थ ! तुम्हें शक्र भी अभिनन्दन करे तो इसमें क्या ताज्जुब ? इसलिए शक्र से अभिवंदित हे जिनेश्वर ! तुम्हें नमस्कार हो ।

सूत्र – ३७

मनःपर्यव, अवधि, उपशान्त और क्षय मोह इन तीनों को जिन कहते हैं । उसमें तुम परम ऐश्वर्यवाले इन्द्र समान हो इसलिए तुम्हें जिनेन्द्र कहा है ।

सूत्र – ३८

सिद्धार्थनरेश्वर के घरमें धन, कंचन, देश-कोश आदि तुमने वृद्धि की इसलिए हे जिनेश्वर तुम वर्द्धमान हो ।

सूत्र – ३९

कमल का निवास है, हस्त तल में शंख चक्र, सारंग (की निशानी) है । वर्षीदान को दिया है । इसलिए हे जिनवर तुम विष्णु कहलाते हो ।

सूत्र – ४०

तुम्हारे पास शिव-आयुध नहीं है और तुम नीलकंठ भी नहीं तो भी जीव की बाह्य-अभ्यंतर (कर्म) रज को तुम हर लेते हो इसलिए तुम हर (शीव) हो ।

सूत्र – ४१

कमल समान आसन है । चार मुख से चतुर्विध धर्म कहते हैं । हंस अर्थात् ह्रस्वगमन से जानेवाले हो इसीलिए तुम ही ब्रह्मा कहलाते हो ।

सूत्र – ४२

समान अर्थवाले ऐसे जीव आदि तत्त्व को सबसे ज्यादा जानते हो । उत्तम निर्मल केवल (ज्ञान-दर्शन) पाए हुए हो इसलिए तुम्हें बुद्ध माना है ।

सूत्र – ४३

श्री वीर जिणंद को इस नामावलि द्वारा मंदपुन्य ऐसे मैंने संस्तव्य किया है । हे जिनवर ! मुज पर करुणा करके हे वीर ! मुजे पवित्र शीवपंथ में स्थिर करो ।

३३ वीरस्तव-प्रकिर्णक-१० का
मुनि दीपरत्नसागर कृत् हिन्दी अनुवाद पूर्ण

नमो नमो निम्मलदंसणस्स

પૂજ્યપાદ્ શ્રી આનંદ–ક્ષમા–લલિત–સુશીલ–સુધર્મસાગર ગુરૂભ્યો નમ:

३३

वीरस्तव

आगमसूत्र हिन्दी अनुवाद

[अनुवादक एवं संपादक]

आगम दीवाकर मुनि दीपरत्नसागरजी

[M.Com. M.Ed. Ph.D. श्रुत महर्षि]

વેબ સાઇટ:– (1) www.jainelibrary.org (2) deepratnasagar.in

ઇમેલ એડ્રેસ:- jainmunideepratnasagar@gmail.com મોબાઇલ 09825967397